साभार: मिलेना ल्यूरी

आओ पढ़ें साथ-साथ

पेन्सिलवैनिया की 14 वर्षीया मिलेना ल्यूरी ने तमिलनाडु के अनाथाश्रम में पुस्तकालय की स्थापना के लिए बड़ी पहल की।

वैदेही अय्यर

वह हैवरफोर्ड, पेन्सिलवैनिया की एक अमेरिकी किशोरी है। सात समन्दर पार, तमिलनाडु के छोटे से गांव गंधर्वकोट्टै में इस बरस जून में खुले पुस्तकालय को उसका नाम दिया गया है। अनाथ और असहाय बच्चों के लिए स्थापित लेडी लिन जॉयफुल होम की मिलेना ल्यूरी लाइब्रेरी दो अलग-अलग संसारों को जोड़ने के इस उद्यमी किशोरी के प्रयासों का ही परिणाम है।

ल्यूरी ने 6 महीने की अवधि में 50,000 पुस्तकें जमा कर लीं जिनकी कीमत करीब-करीब 25 लाख डॉलर है। वह सभी के लिए साक्षरता को समर्पित न्यू जर्सी की अ-लाभसर्जक संस्था ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट की स्वयंसेवक हैं।

मिलेना ल्यूरी की जमा की किताबों में से करीब 5,000 लेडी लिन जॉयफुल होम को दी गई हैं और बाकी पुदुकोट्टै जिले के 10 और ग्रामीण विद्यालयों की दी जाएंगी। आसपास के गांवों के बच्चों तक किताबें पहुंचाने के लिए एक किताबगाड़ी तैयार करने और आसपास के अध्यापकों को अंग्रेजी पढ़ाने में सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण देने की भी योजनाएं है।

मिलेना ल्यूरी लाइब्रेरी को भेंट की गई पुस्तकें तमिल और अंग्रेजी में थीं और उनमें तमिल-अंग्रेजी शब्दकोश भी शामिल थे। पुस्तकालयाध्यक्ष सेल्वी कहती हैं, ''बच्चे किताबें ले जा सकते हैं लेकिन मैं उन्हें किताबें पढ़ कर भी सुनाती हूं... फिर उन से बारी-बारी से पढ़वाती हूं, इससे बच्चों की अंग्रेजी की जानकारी सुधर रही है। अलग-अलग देशों की कहानियां और तस्वीरों वाली किताबें बहुत पसन्द की जाती हैं।''

दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली मिलेना ल्यूरी कहती हैं, ''पुस्तकालय का नाम अपने नाम पर रखे जाने से मैं बहुत सम्मानित अनुभव कर रही हूं। मुझे बहुत खुशी है कि मैं इन बच्चों की मदद कर पाई, इनके चेहरों पर मुस्कुराहट ला पाई।'' वह आगे जाकर फैशन की दुनिया में चोटी के डिज़ाइनरों के साथ काम करना चाहती हैं।''

मिलेना ल्यूरी को ग्लोबल लिटरेसी प्रॉजेक्ट के बारे में अपनी मां से पता चला । वह कहती है,'' लेडी लिन मेरी मां की सबसे अच्छी दोस्तों में से हैं, उन्होंने मां से कहा कि तुम्हारी बेटी सामुदायिक सेवा की किसी परियोजना पर काम करना चाहती है तो अनाथालय में एक पुस्तकालय खोले... ।'' अमेरिकी नागरिक लेडी लिन फॉरेस्टर ड रॉथ्शाइल्ड और उनके पति ने द एंराडा फाउंडेशन के माध्यम से लेडी लिन जॉयफुल होम फॉर चिल्ड्रन के संचालन और आसपास के गांवों में वृक्षारोपण और बच्चों की शिक्षा के प्रसार के लिए धन उपलब्ध करवाया है।

मिलेना ल्यूरी के प्रयासों को सम्मान देते हुए ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट ने पुस्तकालय का नामकरण उसी के नाम पर करने का निश्चय किया। ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट में संपर्क कार्य की वाइस प्रेसिडेंट और इसकी संस्थापक न्यासी कविता रामसामी बताती हैं, ''14 बरस की कम उम्र में ल्यूरी ने सूखे की मार झेलते इस क्षेत्र में आशा का, शिक्षा और अवसरों का, बीज बोया है।'' रामसामी ही इसकी भारत में हुई पहल की प्रभारी हैं।

लेडी लिन जॉयफुल होम फॉर चिल्ड्रन और मिलेना ल्यूरी लाइब्रेरी का संचालन करने वाली संस्था आईआरडीसी के निदेशक एस. पिचैराज बताते हैं, ''मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि मिलेना ल्यूरी लाइब्रेरी खुलने के बाद से बच्चों के पढ़ने और लिखने के कौशल में बहुत सुधार हुआ है।''

लेडी लिन जॉयफुल होम फॉर चिल्ड्रन में रहने वाला 13 बरस का जे.कृष्ण कुमार लाइब्रेरी खुलने से बहुत खुश है। ''मैंने 10-15 किताबें पढ़ ली हैं। मुझे एक कहानी बहुत ही पसंद आई जो एक ऐसे लड़के के बारे में है जिसे अपने अच्छे अंक आने का बहुत घमंड होता है। फिर उसके साथी के उससे ज्यादा अंक आ जाते हैं और उसे समझ में आता है कि कक्षा में सबसे ज्यादा अंक लाना महत्वपूर्ण है लेकिन विनम्र और अच्छा होना भी बहुत महत्वपूर्ण है।''

मिलेना ल्यूरी ने इस परियोजना पर नवंबर 2007 में काम शुरू किया, महीने भर बाद उन्होंने परियोजना के बारे में एक पर्चा तैयार किया और जनवरी 2008 में ई-मेल के माध्यम से लोगों से मदद लेना शुरू की।

वह बताती हैं, ''असल में तो मुझे खास कठिनाई नहीं हुई, लेकिन दसियों हज़ार किताबों को पैक करना झंझट भरा काम था।'' वह कहती हैं कि इस काम के दौरान वह कभी हताश नहीं हुईं, ''मेरे परिवार ने इस प्रयास में मेरी बहुत सहायता की। मां ने लोगों को ई-मेल करने, किताबों को भिजवाने और पैक करवाने में मेरी मदद की। बड़ी मां ने हज़ारों डिक्शनरियां दीं और मेरे परिवार के बाकी लोगों ने भी बहुत सी किताबें दीं।''

मित्रों और हितैषियों से मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया के कारण मिलेना ल्यूरी बहुत से विषयों पर किताबें जमा कर पाईं। डिज़्नी बुक्स और स्कॉलैस्टिक पब्लिशर्स ने भी बहुत मदद की।

पुस्तकालय के उद्घाटन के लिए भारत आईं मिलेना ल्यूरी ने कहा, ''यह मेरी पहली भारत यात्रा है। लोग बहुत अच्छे हैं। मैंने बच्चों से बात करनी चाही लेकिन ज्यादातर वे मेरी बात नहीं समझ पाए। उन्होंने मुझे अपने नाम, आयु और कक्षाएं बताईं।'' उन्होंने कहा कि यहां दिखती गरीबी ने उन्हें बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा दी है।

उन्हें लेडी लिन जॉयफुल होम फॉर चिल्ड्रन के बच्चों को किताबें पढ़कर सुनाने और उनके साथ खेलने में भी बहुत मजा आया हालांकि उन्हें ''भारत जैसी गर्मी की आदत नहीं है।'' उनका इरादा दोबारा यहां आने का है।

मिलेना ल्यूरी और उनकी मां को ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट के काम के बारे में वर्ष 2006 में पता चला। उन्होंने सुना कि न्यू जर्सी के पिंग्री स्कूल में अंतिम वर्ष की छात्रा क्रिस्टिना वानेख, उसके परिवार और उसके साथियों ने इस संगठन और क्षेत्र के अन्य स्कूलों के सहयोग से हज़ारों किताबें जमा कर के जोहानीसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका के छात्रों को भेजीं।

इनमें से कुछ छात्र बाद में 2007 में एक टूटी-फूटी इमारत की मरम्मत करके उसे एक पुस्तकालय में बदलने और रैंडफांटीन और सोवेतो क्षेत्रों में और पुस्तकालय स्थापित करने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए। रामासामी कहती हैं, ''साक्षरता विकास को प्रेरित करती है और प्रगति के नए अवसर रचती है।''

ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट की शुरुआत 1990 के दशक में न्यू जर्सी की स्टेट यूनिवर्सिटी रट्जर्स के कुछ युवा छात्रों ने की थी। यह अब तक दस लाख से अधिक पुस्तकें पुस्तकालयों को भेज चुका है। पूर्वी अफ्रीका, घाना, नाइजीरिया, टोबैगो और दक्षिण अफ्रीका में पुस्तकालयों की स्थापना कर चुका है।

मिलेना की मां क्रिस्टिना वीस ल्यूरी कहती हैं, ''बच्चों और युवाओं के लिए सामुदायिक सेवा परियोजनाओं से जुड़ना बहुत ज़रूरी है, खासतौर पर अगर वह मिलेना की तरह भाग्यशाली हैं जो जीवन में अपने लिए चुनाव कर सकते हैं। संसार में लाखों अच्छी परियोजनाएं हैं... ।''

मिलेना ल्यूरी खुद भी किताबें पढ़ना पसन्द करती हैं, ''मेरी मनपसन्द किताबें हैं 'टु किल ए मॉकिंग बर्ड', 'जेन आयर', 'प्राइड एंड प्रीज्यूडिस'।'' फिलहाल पढ़ना न सीखे बच्चों के लिए उनकी सलाह है, ''तस्वीरों वाली किताबों से पढ़ना शुरू करें और धीरे-धीरे अधिक शब्दों वाली किताबें तक आएं। पढ़ पाना बहुत बड़ा वरदान है। ''

वैदेही अय्यर पत्रकार और सम्पादक हैं और चेन्नै में रहती हैं।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

ग्लोबल लिटरेसी प्रोजेक्ट

http://www.glpinc.org/

लेडी लिन जॉयफ़ुल होम फ़ॉर चिल्ड्रन

http://irdc-india-uk.org/prg_lljhc.htm